प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

किसी भी स्थान पर पहुँचने में समय लगता है। किसी भी बात को समझने में समय लगता है। किसी भी दृढ़ मत अथवा राय को छोड़ने में समय लगता है। किसी भी उपयोगी और मूल्यवान वस्तु का निर्माण करने में समय लगता है। तो अगर ऐसा लगे कि तुम्हें प्रेम की ओर बढ़ते रहने के लिए प्रयत्न करते रहना होगा तो पीछे मत हटो। याद रखो : मात्र यह प्रयत्न ही एक गुप्त कोष हो सकता है।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।